भूगोल

आठवीं कक्षा

भारत का संविधान

भाग 4 क

मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य– भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्र ध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करें;

(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखें;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध है;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करें;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू ले;

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य के लिए शिक्षा के अवसर प्रदान करे ।

शासन निर्णय क्रमांक : अभ्यास-२११६/(प्र.क्र.४३/१६) एसडी-४ दिनांक २५.४.२०१६ के अनुसार समन्वय समिति का गठन किया गया। दिनांक २९.१२.२०१७ को हुई इस समिति की बैठक में सन २०१८-१९ इस कालावधि से यह पाठ्यपुस्तक निर्धारित करने हेतु मान्यता प्रदान की गई।

भूगोल

आठवीं कक्षा

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिति एवं अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे

GKB1ID

आपके स्मार्ट फोन के DIKSHA APP द्वारा पाठ्यपुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर दिए गए Q.R.Code के माध्यम से डिजीटल पाठ्यपुस्तक और प्रत्येक पाठ में दिए हुए Q.R.Code के माध्यम से उन पाठों से संबंधित अध्ययन-अध्यापन करने के लिए उपयुक्त दृश्य-श्रव्य सामग्री/साहित्य उपलब्ध होगा।

प्रथमावृत्ति : २०१८
तीसरा पुनर्मुद्रण : २०२१

© महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिति एवं अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे ४११००४

इस पुस्तक का सर्वाधिकार महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के अधीन सुरक्षित है । इस पुस्तक का कोई भी भाग महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के संचालक की लिखित अनुमति के बिना उद्धृत नहीं किया जा सकता ।

भूगोल विषय समिति :

डॉ. एन. जे. पवार, अध्यक्ष
डॉ. सुरेश जोग, सदस्य
डॉ. रजनी माणिकराव देशमुख, सदस्य
श्री सचिन परशुराम आहेर, सदस्य
श्री गौरीशंकर दत्तात्रय खोबरे, सदस्य
श्री र. ज. जाधव, सदस्य-सचिव

भूगोल अभ्यास गट :

डॉ. हेमंत मंगेशराव पेडणेकर
डॉ. कल्पना प्रभाकरराव देशमुख
डॉ. सुरेश गेणूराव साळवे
डॉ. सावन माणिकराव देशमुख
श्रीमती. समृद्धि मिलिंद पटवर्धन
डॉ. संतोष विश्वास नेवसे
डॉ. हणमंत लक्ष्मण नारायणकर
श्री संजयकुमार गणपत जोशी
श्री पुंडलिक दत्तात्रय नलावडे
श्री पोवार बाबुराव श्रीपती
श्री अतुल दीनानाथ कुलकर्णी
श्रीमती कल्पना विश्वास माने
श्री पदमाकर प्रल्हादराव कुलकर्णी
श्री संजय श्रीराम पैठणे
श्री श्रीराम रघुनाथ वैजापूरकर
श्री ओमप्रकाश रतन थेटे
श्री शांताराम नथ्थू पाटील
श्री सागर राजु ससाणे
श्री रामेश्वर सदाशिवराव चरपे
श्री गुलज़ार फकिरमोहम्मद मनियार

चित्रकार : श्री भटू रामदास बागले
मुखपृष्ठ एवं सजावट : श्री भटू रामदास बागले
मानचित्रकार : श्री रविकिरण जाधव
अक्षरांकन : मुद्रा विभाग, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे.
अनुवादक : श्रीमती समृद्धि मिलिंद पटवर्धन
समीक्षक : डॉ.पद्‌मजा घोरपडे
अनुवाद संयोजन : श्री र. ज. जाधव, सदस्य-सचिव
कागद : ७० जी.एस.एम. क्रीमवोव्ह
मुद्रणादेश : एन् /पिबी/२०२१-२२/(३३,०००)
मुद्रक : मे. एस्. ग्राफीक्स(इंडिया)प्रा. लि., ठाणे

निर्मिती :

श्री सच्चितानंद आफळे, मुख्य निर्मिति अधिकारी
श्री विनोद गावडे, निर्मिति अधिकारी
श्रीमती मिताली शितप, सहायक निर्मिति अधिकारी

प्रकाशक

श्री विवेक उत्तम गोसावी
नियंत्रक
पाठ्यपुस्तक निर्मिति मंडळ,
प्रभादेवी, मुंबई-२५.

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता,**
प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता
और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) **को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं ।**

राष्ट्रगीत

जनगणमन - अधिनायक जय हे
भारत - भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत - भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ।।

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है । सभी भारतीय मेरे भाई-बहन हैं ।

मुझे अपने देश से प्यार है । अपने देश की समृद्ध तथा विविधताओं से विभूषित परंपराओं पर मुझे गर्व है ।

मैं हमेशा प्रयत्न करूँगा/करूँगी कि उन परंपराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता मुझे प्राप्त हो ।

मैं अपने माता-पिता, गुरुजनों और बड़ों का सम्मान करूँगा/करूँगी और हर एक से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करूँगा/करूँगी ।

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं अपने देश और अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा रखूँगा/रखूँगी । उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है ।

प्रस्तावना

विद्‌यार्थी मित्रो,

आठवीं कक्षा उच्च प्राथमिक शिक्षा का अंतिम वर्ष है। इस कक्षा में तुम्हारा स्वागत है । तुमने कक्षा तीसरी से कक्षा पाँचवी तक परिसर अध्ययन एवं कक्षा छठी से भूगोल विषय का अध्ययन स्वतंत्र पाठ्‌यपुस्तकों के माध्यम से किया है । कक्षा आठवीं की भूगोल की यह पाठ्‌यपुस्तक तुम्हारे हाथ में देते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है ।

इस पाठ्‌यपुस्तक के माध्यम से भूगोल की कुछ उच्चतर संकल्पनाएँ तुम सीखोगे । बचपन से ही हमें आसमान में दिखाई देने वाले बादलों, वर्षा के बारे में उत्सुकता होती है । इनका विशेष अध्ययन हम इस पुस्तक में करेंगे । अपने नीले ग्रह की आंतरिक संरचना कैसी है, मानव ने किस आधार पर आंतरिक संरचना के विषय में अनुमान लगाए हैं इत्यादि का विवेचन इस पाठ्‌यपुस्तक में संक्षेप में किया गया है । पृथ्वी पर सर्वाधिक भाग को व्याप्त किए हुए जलमंडल के जल की गतिमानशीलता, प्रवाह एवं उसके पीछे के बल का अध्ययन भी तुम्हें इस पाठ्‌यपुस्तक में करना है । भूमि का उपयोग, उद्‌योग, जनसंख्या आदि मानवीय जीवन के अविभाज्य घटक हैं । इन घटकों का जिज्ञासा वर्धक परिचय इस पाठ्‌यपुस्तक के माध्यम से होगा । भविष्य में भी इन संकल्पनाओं का उपयोग तुम्हें होगा। इन घटकों के नगरीय एवं ग्रामीण पहलुओं को अच्छे से समझ लेना । इन घटकों का मानव के विकास से सहसंबंध जोड़ने का प्रयास करना ।

इन सभी घटकों को समझने के लिए पाठ्‌यपुस्तक में अनेक गतिविधियाँ एवं उपक्रम दिए गए हैं । विचारों को बढ़ावा देने वाले प्रश्न जैसे थोड़ा विचार करो, थोड़ा दिमाग लगाओ, ढूँढ़ो तो आदि शीर्षकों के अंतर्गत प्रस्तुत किए हैं । इसका उपयोग विद्‌यार्थियों को अवश्य होगा ।

पाठ्‌यपुस्तक में दिए गए मानचित्र एवं आकृतियों का उपयोग अवश्य करो। इससे भौगोलिक संकल्पनाएँ सरल होने में सहायता होगी । दी गई गतिविधियाँ स्वतः करके देखो । इसके पहले की पाठ्‌यपुस्तकों में दिया गया संबोधन भी तुम्हें उपयोगी लगता होगा । उसका उपयोग करो ।

आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ !

(डॉ. सुनिल मगर)
संचालक
महाराष्ट्र राज्य पाठ्‌यपुस्तक निर्मिति एवं
अभ्यासक्रम संशोधन मंडल, पुणे.

पुणे
दिनांक : १८ अप्रैल २०१८ (अक्षय्य तृतीया)
भारतीय सौर : २९ चैत्र १९४०

कक्षा आठवीं भूगोल

सुझाई गई शिक्षा प्रक्रिया	अध्ययन निष्पत्ति
विद्यार्थियों को जोड़ियों में/समूह में/ व्यक्तिगत अध्ययन का अवसर देना और उन्हें निम्न बातों के लिए प्रेरित करना ।	**विद्यार्थी —**
• भूगोलक अथवा संसार के मानचित्र में देशांतर रेखा के आधार पर विविध प्रदेशों में समय का पता लगाना । • मूल देशांतर रेखा से विश्व के विविध स्थानों के स्थानीय समय में अंतर ढूँढ़ना ।	08.73G.01 भूगोलक एवं मानचित्र पर देशांतर रेखाओं का उपयोग कर स्थानीय एवं मानक समय बता सकते हैं । 08.73G.02 देशांतरीय स्थान के आधार पर मानक समय तथा स्थानीय समय के सहसंबंधों के अनुसार सहजता से प्रयोग करते हैं ।
• पृथ्वी की आंतरिक संरचना समझने के लिए आकृति/प्रतिकृति/दृश्य प्रतिमा/दृक-श्राव्य माध्यमों का प्रयोग करना ।	08.73G.03 पृथ्वी के अंतरंग के बारे में आकृतियों / प्रतिकृतियों / चित्रों के माध्यम से स्पष्टीकरण दे सकते हैं ।
• प्रयोग के माध्यम से वाष्पीभवन, संघनन प्रक्रियाएँ समझना । • आर्द्रता को प्रभावित करने वाले घटक समझना । • चित्र तथा दृक-श्राव्य साधनों के माध्यम से बादलों के संदर्भ में जानकारी प्राप्त करना ।	08.73G.04 वाष्पीभवन एवं संघनन जैसी प्राकृतिक घटनाओं को समझा सकते हैं । 08.73G.05 आर्द्रता पर प्रभाव डालनेवाले कारकों को स्पष्ट करते हैं । 08.73G.06 मेघों के प्रकारों को समझ कर वृष्टि से संबंधित अनुमान व्यक्त कर सकते हैं ।
• सागरीय नितल रचना को आकृति/प्रतिकृति/दृक-श्राव्य साधनों के माध्यम से समझना । • प्रयोगों के माध्यम से समुद्री जलधाराओं की निर्माण-प्रक्रिया समझना । • सागरीय जलधाराओं का जलवायु, मत्स्यव्यवसाय, जलीय यातायात पर होने वाले परिणाम समझना ।	08.73G.07 सागरीय भू-आकृतियों को चित्रों के माध्यम से पहचान सकते हैं । 08.73G.08 सागरीय निक्षेपों के बारे में चर्चा करते हैं । 08.73G.09 सागरीय धाराओं की उत्पत्ति के कारण बता सकते हैं । 08.73G.10 सागरीय धाराओं के मानवीय जीवन पर होनेवाले प्रभावों को सोदाहरण स्पष्ट कर सकते हैं ।
• चित्र, मानचित्र, प्रतिमा के आधार पर ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में भूमि का उपयोग बताना । • भूमि उपयोग का आकृतिबंध पहचानना ।	08.73G.11 ग्रामीण एवं नगरीय भूमि उपयोगों में अंतर को स्पष्ट कर सकते हैं । 08.73G.12 मानचित्र में दर्शाए भूमि उपयोग के माध्यम से ग्रामीण एवं नगरीय अधिवासों की जानकारी प्रस्तुत कर सकते हैं।
• इसे समझना कि जनसंख्या एक संसाधन है । • जनसंख्या का आयु-समूह के अनुसार, लिंग-अनुपात, जन्म-मृत्यु दर, ग्रामीण तथा शहरी अनुपात, व्यवसाय के अनुसार रचना, साक्षरता आदि घटकों के लिए बनाए आलेख नमूनों का अध्ययन करना ।	08.73G.13 जनसंख्या के अध्ययन का महत्व बता सकते हैं । 08.73G.14 जनसंख्या की संरचना स्पष्ट कर सकते हैं । 08.73G.15 जनसंख्या की गुणवत्ता पर प्रभाव करने वाले कारकों को सकारण समझा सकते हैं । 08.73G.16 जनसंख्या के असमान वितरण को समझने के लिए संसार के मानचित्र का वाचन कर स्पष्टीकरण दे सकते हैं ।
• विविध उदाहरणों द्वारा उद्योगों में अंतर पहचानना । • औद्योगिक क्षेत्रों को भेंट देकर विविध संदर्भ स्रोतों के द्वारा जानकारी प्राप्त करना । • उद्योगों के सामाजिक दायित्व के संदर्भ में चर्चा करना । • मानचित्र के द्वारा महाराष्ट्र तथा भारत का औद्योगिक विकास समझना ।	08.73G.17 विभिन्न उद्योगों का वर्गीकरण कर सकते हैं । 08.73G.18 उद्योगों के महत्व को बता सकते हैं । 08.73G.19 उद्योगों के सामाजिक उत्तरदायित्व (C.S.R.) के विषय में बता सकते हैं । 08.73G.20 औद्योगिक विकास पर परिणाम करनेवाले कारकों को स्पष्ट करते हैं । 08.73G.21 उद्योगों के लिए अनुकूल नीतियों की जानकारी प्राप्त करते हैं ।
• मानचित्र वाचन में मापनी के आधार पर अनुमान लगाना । • मानचित्र में दी मापनी का दूसरी मापनी में रूपांतरण करना । • मानचित्र की मापनी के आधार पर मानचित्र के प्रकार समझ लेना । • किसी क्षेत्र का चयन कर क्षेत्र अध्ययन की प्रक्रिया पूर्ण करना, प्रश्नावली तैयार करना । • प्राप्त जानकारी का विश्लेषण करना, अर्थ की व्याख्या करना एवं प्रतिवेदन तैयार करना ।	08.73G.22 दो स्थानों के बीच मानचित्र और धरातल पर के अंतर के आधार पर मापनी क्या होनी चाहिए यह निश्चित कर सकते हैं । 08.73G.23 मानचित्र पर मापनी बनाने के लिए विभिन्न पद्धतियों को उदाहरण के द्वारा स्पष्ट कर सकता है । 08.73G.24 मानचित्र की मापनी के आधार पर मानचित्र के प्रकार पहचान सकते हैं । 08.73G.25 मानचित्र की मापनी का प्रत्यक्ष रूप से उपयोग करते हैं । 08.73G.26 क्षेत्र -अध्ययन हेतु नियोजन करते हैं । 08.73G.27 क्षेत्र -अध्ययन हेतु प्रश्नावली तैयार करते हैं । 08.73G.28 प्राप्त जानकारी के आधार पर क्षेत्र अध्ययन का प्रतिवेदन तैयार करते हैं ।

– शिक्षकों के लिए –

- ✓ सबसे पहले स्वयं पाठ्यपुस्तक समझ लें ।
- ✓ प्रत्येक पाठ में दी गई कृति के लिए ध्यानपूर्वक और स्वतंत्र नियोजन करें। नियोजन के अभाव में पाठ का अध्यापन करना उचित नहीं होगा।
- ✓ अध्ययन-अध्यापन में 'अंतरक्रिया', 'प्रक्रिया', 'सभी विद्यार्थियों का प्रतिभाग' तथा 'आपका सक्रिय मार्गदर्शन' अत्यंत आवश्यक हैं ।
- ✓ विषय का उचित पद्धति से आकलन होने हेतु विद्यालय में उपलब्ध भौगोलिक साधनों का आवश्यकतानुसार उपयोग करना समीचीन होगा। इस दृष्टि से विद्यालय में उपलब्ध भूगोलक, संसार, भारत, राज्यों के मानचित्र, मानचित्रावली का उपयोग करना अनिवार्य है; इसे ध्यान में रखें ।
- ✓ यद्यपि पाठों की संख्या सीमित रखी गई है फिर भी प्रत्येक पाठ के लिए कितने कालांश लगेंगे; इसका विचार किया गया है । संकल्पनाएँ अमूर्त होती हैं । अतः वे दुर्बोधपूर्ण और क्लिष्ट होती हैं। इसीलिए अनुक्रमणिका में कालाशों का जिस प्रकार उल्लेख किया गया है; उसका अनुसरण करें । पाठ को संक्षेप में निपटाने का प्रयास न करें । इससे विद्यार्थियों को भूगोल विषय बौद्धिक बोझ न लगकर विषय को आत्मसात करने में सहायता प्राप्त होगी ।
- ✓ अन्य सामाजिक विज्ञानों की भाँति भूगोल की संकल्पनाएँ सहजता से समझ में नहीं आतीं। भूगोल की अधिकांश अवधारणाएँ वैज्ञानिक मापदंडों और अमूर्त कारकों पर निर्भर करती हैं। इन मापदंडों को समूह में और एक-दूसरे के सहयोग से सीखने के लिए प्रोत्साहन दें । इसके लिए कक्षा की संरचना में परिवर्तन करें । कक्षा का ढाँचा ऐसा बनाएँ कि विद्यार्थियों को पढ़ने के लिए अधिकाधिक अवसर मिलेगा ।
- ✓ पाठ में दी गईं विभिन्न चौखटें और उनके आनुषंगिक रूप से सूचना देनेवाला 'ग्लोबी' चरित्र विद्यार्थियों में प्रिय होगा; यह देखें।
- ✗ प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक रचनात्मक पद्धति एवं गतिविधियुक्त अध्यापन के लिए तैयार की गई है । प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक के पाठ कक्षा में केवल पढ़कर न पढ़ाएँ ।
- ✓ संबोधों की क्रमिकता को ध्यान में लें तो पाठों को अनुक्रमणिका के अनुसार पढ़ाना विषय के सुयोग्य ज्ञान निर्माण की दृष्टि से उचित होगा ।
- ✓ 'क्या तुम जानते हो?' इस चौखट का मूल्यांकन हेतु विचार न करें ।
- ✓ पाठ्यपुस्तक के अंत में परिशिष्ट दिए गए हैं। इस परिशिष्ट में पाठों में आए हुए भौगोलिक शब्दों/अवधारणाओं की विस्तृत जानकारी दी गई है। परिशिष्ट में समाविष्ट शब्द वर्णक्रमानुसार हैं। इस परिशिष्ट में दिए गए शब्द पाठों में नीली चौखट द्वारा दर्शाए गए हैं। जैसे 'दिनमान' (पाठ क्र. १, पृष्ठ क्र. १)
- ✓ परिशिष्ट के अंत में संदर्भ के लिए संकेत स्थल दिए गए हैं। साथ ही; संदर्भ के लिए उपयोग में लाई गई सामग्री की जानकारी दी गई है। अपेक्षा यह की जाती है कि आप स्वयं और विद्यार्थी इस संदर्भ का उपयोग करेंगे। इस संदर्भ सामग्री के आधार पर आपको पाठ्यपुस्तक के दायरे के बाहर जाने में निश्चित रूप से सहायता प्राप्त होगी। इस विषय को गहराई से समझने के लिए विषय का अतिरिक्त पठन/वाचन सदैव ही उपयोगी सिद्ध होता है; यह ध्यान में रखें।
- ✓ मूल्यांकन के लिए कृतिप्रधान, मुक्तोत्तरी, बहुवैकल्पिक, विचारप्रवर्तक प्रश्नों का उपयोग करें। इसके कुछ नमूने पाठों के अंत में स्वाध्यायों में दिए गए हैं।
- ✓ पाठ्यपुस्तक में दिए गए 'क्यू आर कोड'का उपयोग करें।

– विद्यार्थियों के लिए –

ग्लोबी का उपयोग : इस पाठ्यपुस्तक में भूगोलक का उपयोग एक चरित्र के रूप में किया गया है । उसका नाम है-'ग्लोबी'। यह ग्लोबी चरित्र प्रत्येक पाठ में तुम्हारे साथ रहेगा । पाठ में अपेक्षित विभिन्न घटकों को समझने में यह ग्लोबी तुम्हारी सहायता करेगा । प्रत्येक स्थान पर यह तुम्हें कुछ कार्य करने के लिए सुझाएगा और तुम उसे करने का प्रयास करोगे ।

अनुक्रमणिका

क्र.	पाठ का नाम	क्षेत्र	पृष्ठ क्रमांक	अपेक्षित कालांश
१.	स्थानीय समय एवं मानक समय	सामान्य भूगोल	०१	०९
२.	पृथ्वी की आंतरिक संरचना	प्राकृतिक भूगोल	०९	१०
३.	आर्द्रता एवं मेघ	प्राकृतिक भूगोल	१६	१०
४.	सागरीय नितल की संरचना	प्राकृतिक भूगोल	२४	०९
५.	सागरीय धाराएँ	प्राकृतिक भूगोल	२९	०९
६.	भूमि-उपयोग	मानवीय भूगोल	३५	१०
७.	जनसंख्या	मानवीय भूगोल	४२	१०
८.	उद्योग	मानवीय भूगोल	५२	१०
९.	मानचित्र मापनी	प्रात्यक्षिक भूगोल	६०	०८
१०.	क्षेत्र अध्ययन	प्रात्यक्षिक भूगोल	६८	०८
११.	परिशिष्ट	--	७०	--
१२.	गतिविधि पृष्ठ	--	७५	--

S.O.I. Note : The following foot notes are applicable : (1) © Government of India, Copyright : 2018. (2) The responsibility for the correctness of internal details rests with the publisher. (3) The territorial waters of India extend into the sea to a distance of twelve nautical miles measured from the appropriate base line. (4) The administrative headquarters of Chandigarh, Haryana and Punjab are at Chandigarh. (5) The interstate boundaries amongst Arunachal Pradesh, Assam and Meghalaya shown on this map are as interpreted from the “North-Eastern Areas (Reorganisation) Act. 1971,” but have yet to be verified. (6) The external boundaries and coastlines of India agree with the Record/Master Copy certified by Survey of India. (7) The state boundaries between Uttarakhand & Uttar Pradesh, Bihar & Jharkhand and Chattisgarh & Madhya Pradesh have not been verified by the Governments concerned. (8) The spellings of names in this map, have been taken from various sources.

DISCLAIMER Note : All attempts have been made to contact copy righters (©) but we have not heard from them. We will be pleased to acknowledge the copy right holder (s) in our next edition if we learn from them.

मुखपृष्ठ : कक्षा तीसरी के विद्यार्थी अब आठवीं में आ गए हैं । उनके अनुभवों का क्षितिज भी विस्तृत हो रहा है । अब वे पृथ्वी के आंतरिक भागों एवं भूचुंबकीय क्षेत्र का अनुभव ले रहे हैं ... (काल्पनिक चित्र)

पार्श्वपृष्ठ : (१) परछाई वाली गतिविधि करते हुए विद्यार्थी - सौजन्य - सतीश जगदाले, श्रीमंत रानी निर्मलाराजे कन्या प्रशाला, अक्कलकोट (२) स्थलांतरण का एक प्रकार (३) मेघ - सौजन्य - आलिशा जाधव (४) तापमान एवं आर्द्रता मापक यंत्र (५) मरियाना गर्त में सर्वेक्षण हेतु जानेवाली छोटी पनडुब्बी